धनबाद जिला (झारखण्ड) के संथाल जनजाति पर वैश्वीकरण का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभावःएक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध–प्रस्तावना

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद के

सामाजिक विज्ञान संकाय के

राजनीति विज्ञान विभाग में

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु समर्पित

शोधार्थी

सुनिता कुमारी

द्वारा

(पंजीयन संख्या– ....)

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ0 सुमिता तिवारी

(विभागाध्यक्ष, महाविद्यालय विभाग राजनीति विज्ञान एस0एस0एल0एन0टी0 महिला महाविद्यालय, धनबाद)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

जनवरी 2024

धनबाद जिला (झारखण्ड) के संथाल जनजाति पर वैश्वीकरण का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभावः– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

परियचः–

वैश्वीकरण अब पहले की तरह जटिल शब्द नहीं रह गया है। वैश्वीकरण ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एक प्रमुख आयाम है। यह भारत की ही नहीं पूरे विश्व को प्रभावित किया है। झारखण्ड के जनजातियों पर भी वैश्वीकरण ने प्रभाव डाला है। धनबाद जिला के संथाल जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुआ है। सामाजिक व्यवस्था में संस्कृति, भाषा, पहनावा, पूजा, खान–पान, व्यवहार आदि शामिल है।[1] वैश्वीकरण के कारण धनबाद जिले के संथाल जनजातियों की जो भाषा शैली थी वह गायब हो गया है। आज समाज की अजीब विडम्बना है कि अपने से उम्र में बड़े लोगों को सीधे नाम लेकर बुलाया जा रहा है और उम्र में अपने से छोटो को आप से सम्बोधित किया जा रहा है। वैश्वीकरण के कारण कुछ संस्कृति को फैलने का अवसर प्राप्त हुआ तो कुछ संस्कृतियाँ इसे संकट का दौर समझ रही है। वैश्वीकरण का प्रभाव धनबाद के संथाल जनजाति के खान–पान पर भी पड़ा है। धनबाद के संथान जनजाति का खान–पान बहुत ही साधारण और प्रकृतिक हुआ करता था, लेकिन वैश्वीकरण के कारण लोग परम्परागत खान–पान को छोड़कर आज चाऊमीन, मोमोज, वर्गर, पिज्जा, सैंडविच ने ले लिया है। जिसका असर इनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा। वैश्वीकरण का प्रभाव धनबाद के संथाल जनजाति के पारिवारिक व्यवस्था पर भी पड़ा। संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवार में तब्दील हो गया। वैश्वीकरण विश्व परिवार और विश्व गाँव की बात करता है वह तीन पीढ़ियों के परिवार को साथ न रख सका।[2]

वैश्वीकरण एक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण शिक्षा और राजनीतिक व्यवस्था शामिल है।[3] इस प्रक्रिया ने धनबाद के संथाल जनजाति के आर्थिक व्यवस्था ही बदल दिया है। धनबाद में नए–नए उद्योग खोलने से इनके आर्थिक व्यवस्था पर असर देखने को मिलता है। लोग अपने घर से बेघर हो गए। इनकी खेती–बाड़ी छुट गया और अपनी आर्थिक व्यवस्था को चलाने के लिए मजदूर का काम करने लगे। वैश्वीकरण के कारण धनबाद के संथाल जनजाति के आर्थिक व्यवस्था को लाभ भी मिला है।

3इसी प्रकार वैश्वीकरण के कारण धनबाद के संथाल जनजाति के राजनीतिक व्यवस्था पर भी असर पड़ा है। प्राचीन काल में ही संथाल जनजाति के अपनी एक शासन व्यवस्था थी। इनकी जो शासन व्यवस्था थी वह जनतांत्रिक ही थी। गाँव के ही कुछ व्यक्तियों के पास राज कार्य थे। इसमें सभी प्रकार के

मामलों का हल किया जाता है। स्वतन्त्रता के बाद इन जनजातियों को आरक्षण मिला, तो इनके परंपरागत राजनीतिक परिवेश में बदलाव आया पर नाममात्र का परन्तु 90 के दशक में जब भारत में वैश्वीकरण आया तो इन पर व्यापक परिवर्तन दिखा। वैश्वीकरण के कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि, रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला, जाति पंचायतों का ह्रास हुआ। सामाजिक नियमों में खुलापन आया, सहभागिता बढ़ी, मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी, कानूनों के ज्ञान में वृद्धि हुई आदि कारण से धनबाद के संथाल जनजाति के राजनीतिक परिवेश में बदलाव आया अर्थात् इनके परंपरागत राजनीतिक ढाँचे में वैश्वीकरण के कारण बदलाव आया है। वैश्वीकरण के कारण धनबाद के संथाल जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन तीव्र हो गया है। वर्तमान में यह एक व्यापक समस्या बन गया है। इसमें अध्ययन के साथ तथ्यों का अनुसंधान करना होगा।

साहित्य समीक्षा

1. सिंह, रामगोपाल (2011) की पुस्तक वैश्वीकरण मीडिया और समाज में संस्कृति में वैश्वीकरण के प्रभावों का वर्णन किया गया। भाषा, खान–पान, पहनावा, परिवार व्यवस्था पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है उसका वर्णन किया गया है।[4]
2. कुमार, अमित (2010) की पुस्तक में ''भूमंडलीकरण'' एवं समाज में हो रहे परिवर्तन पर वैश्वीकरण किस प्रकार से प्रभाव डाला, जनजातीय संस्कृति में किस प्रकार परिवर्तन हो रहा है उसका वर्णन किया है।[5]
3. भार्गव, नरेश (2014) लेख में वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिपेक्ष में वैश्वीकरण के द्वारा किस प्रकार समाज का परिवर्तन का वर्णन किया है। जिसमें भाषा, वेशभूषा, खान–पान आदि है।[6]
4. चतुर्वेदी, अनुप (2013) लेख में, वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव में भारतीय जनजातीय संस्कृति का वर्णन किया है।[7]
5. रसैल (1975) ने अपने अध्ययन में जनजाति की उत्पत्ति, निवास क्षेत्र, जीवन शैली, खान–पान, परम्परागत उत्पादन नातेदारी उपजाति का अध्ययन किया है।[8]
6. कुमारी आशा (2015) ने अपने पुस्तक में वैश्वीकरण का भारतीय जनजातियों पर प्रभाव, जनजातियों में भूमि का वितरण का वर्णन किया है।[9]

शोध समस्या

धनबाद के संथाल जनजाति के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक वैश्वीकरण के साहित्यिक समीक्षा से ज्ञात होता है कि पूर्व में अनेक विद्वानों ने अपनी खोज प्रस्तुत किया है, परंतु किसी ने भी धनबाद के संथाल जनजाति के वैश्वीकरण के प्रभाव का शोध नहीं किया है, इसमें विस्तृत रूप से आज शोध की आवश्यकता है। लोगों के साक्षात्कार लेने में कठिनायों का सामना करना पड़ सकता है। इस शोध में

धनबाद के संथाल जनजाति का जो विषय चुना गया है वह पूरी तरह से नवीन और मौलिक है। उपयुक्त विषय पर कोई कार्य नहीं हुआ है। इस शोध को नवीनतम् अनुसंधान और मौलिकता के साथ शोध विषय को पूरा किया जायेगा।

शोध उद्देश्यः–

- धनबाद के संथाल जनजाति के समाजिक व्यवस्था पर वैश्वीकरण का मूल्यांकन करना।
- धनबाद के संथाल जनजाति के आर्थिक व्यवस्था के परिवर्तन का पता लगाना।
- धनबाद के संथाल जनजाति के राजनीतिक व्यवस्था का परिवर्तन का पता लगाना।
- धनबाद के संथाल जनजाति के पारिवारिक एवं संस्कृति व्यवस्था में वैश्वीकरण के परिवर्तन का पता लगाना।

परिकल्पना

- वैश्वीकरण के कारण धनबाद जिला के संथाल जनजातियों के सामाजिक व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- वैश्वीकरण द्वारा धनबाद के संथाल जनजातियों के आर्थिक व्यवस्था में नकारात्मक परिवर्तन आया है।
- वैश्वीकरण के कारण धनबाद के संथाल जनजातियों के राजनीतिक व्यवस्था में नकारात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन आया है।
- धनबाद के संथाल जनजातियों के पारिवारिक एवं संस्कृति व्यवस्था पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।

शोध प्रविधियाँ

किसी भी शोध को पूरा करने के लिए विभिन्न पद्धतियों का सहारा लेना पड़ता है। इस शोध को पूरा करने के लिए प्राथमिक स्त्रोत तथा द्वितीय स्त्रोत का सहारा लेंगे तथा साथ में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

1. प्राथमिक तथ्यों का संकलनः– विषय से संबंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन निम्न उपकरणों द्वारा संपन्न किया जाएगा।
    - अवलोकन
    - साक्षात्कार

- प्रश्नावली

2. द्वितीय तथ्यों का संकलनः– विषय से संबंधित द्वितीय तथ्यों के संकलन हेतु निम्न माध्यमों का प्रयोग किया जाएगा।

    - शोध पत्र
    - विषय संबंधी पुस्तके
    - सरकारी और प्रशासनिक दस्तावेज
    - अन्य माध्यम (जैसे– समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन और इंटरनेट)

शोध का महत्वः–

- धनबाद के संथाल जनजातियों के सामाजिक व्यवस्था में आये परिवर्तन की जानकारी मिलेगी।
- इस शोध कार्य से धनबाद के संथाल जनजातियों के आर्थिक जीवन में परिवर्तन की जानकारी प्राप्त होगी।
- धनबाद के संथाल जनजाति के वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक व्यवस्था के परिवर्तन का पता चलेगा।
- इस शोध कार्य से वैश्वीकरण के कारण धनबाद के संथाल जनजाति के पारिवारिक एवं संस्कृति व्यवस्था में प्रतिकूल प्रभाव का पता चलेगा।

शोध सीमाएँ :–

- भाषायी स्तर पर जनजातियों के वास्तविक दृष्टिकोण को समझने में परेशानी हो सकती है।
- इस शोध कार्य में ऐतिहासिक लेखों तथा कृतियों की इकट्ठा करने वाले कठिनायों का सामना करना पड़ सकता है।

भविष्य के कार्य :–

इस शोध अध्ययन से धनबाद के संथाल जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में वैश्वीकरण के कारण हो रहे परिवर्तन का पता चलेगा। लोगों को इनकी परम्परागत प्रशासनिक व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन का पता चलेगा एवं भविष्य में किये जाने वाले शोध में सहायता प्राप्त होगी।

अध्यायीकरण

- **प्रस्तावना**

अध्याय 1:— संथाल जनजातियों की अवधारणा
अध्याय 2:— वैश्वीकरण की अवधारणा
अध्याय 3:— धनबाद जिला के संथाल जनजाति के सामाजिक व्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव
अध्याय 4:— धनबाद जिला के संथाल जनजाति के आर्थिक व्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव
अध्याय 5:— धनबाद के संथाल जनजाति के राजनीतिक क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- निष्कर्ष

संदर्भ सूची

1. सिंह, रामगोपाल (2011), वैश्वीकरण मीडिया और समाज दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन
2. महतो, राधागोविन्द (1992) झारखण्ड लोक संस्कृति, भैरव पुस्तकालय कलकत्ता
3. कुमारी आशा (2015), वैश्वीकरण का भारतीय जनजातियों पर प्रभाव, विकल्प प्रकाशन 2226/बी, प्रथम तल, गली नं0— 33, पहला पुस्ता, सोनिया बिहार दिल्ली— 110094
4. चतुर्वेदी, अनुप (2013), वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव www.worldwidejourmalsj.com

ग्रंथ सूची

1. महतो, राधागोविन्द (1992) झारखण्ड लोक संस्कृति, भैरव पुस्तकालय कलकत्ता
2. सिंह, रामगोपाल (2011), वैश्वीकरण मीडिया और समाज दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन
3. भार्गव, नरेश (2014), वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिपेक्ष, रावत पब्लिकेशन, नरेश भार्गव
4. प्रसाद, अर्जुन (2013), आधुनिक जीवन और पर्यावरण, नई दिल्ली, कृष्ण बुक सेन्टर
5. पटवा, शुभू (1998), पर्यावरण की संस्कृति, बीकानर, बाग्देवी प्रकाशन
6. कुमार, अमित (2010), भूमण्डलीकरण एवं समाज www.socialresearchfoudation.com
7. चतुर्वेदी, अनुप (2013), वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव www.worldwidejourmalsj.com
8. विद्यार्थी, एल.पी. एवं कुमार बी.बार (1977), ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया, साउथ एशिया बुक्स http//ci.nii.ac/ncid/BA192922062
9. अहमद, जि(1951), बिहार के आदिवासी (प्रथम संस्करण) नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलों रोड, दिल्ली— 110007

10. नायडू पी.आर. (1997), भारत के आदिवासी (विकास की समस्याएँ) राधा पब्लिकेशन (4378 / 4बी), अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।

11. कुमारी आशा (2015), वैश्वीकरण का भारतीय जनजातियों पर प्रभाव, विकल्प प्रकाशन 2226 / बी, प्रथम तल, गली नं0– 33, पहला पुस्ता, सोनिया बिहार दिल्ली– 110094